PGCMHT

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2026

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

Scanned with CamScanner

मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2026

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'मलयालम–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.एम.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**31.03.2026**	**30.09.2026**
एम.टी.टी.-004 मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**31.03.2026**	**30.09.2026**
एम.टी.टी.–005 मलयालम–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	**31.03.2026**	**30.09.2026**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

Scanned with CamScanner

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :..	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :..
अध्ययन केंद्र का नामः	तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

Scanned with CamScanner

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

Scanned with CamScanner

मलयालम–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–004)

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–004
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–004 / एएसटी / (टी.एम.ए) / 2025

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग तीन सौ शब्दों में दीजिए। 10 × 2 = 20

(क) किसी भी भाषा का अध्ययन उसकी संस्कृति की जानकारी के बिना पूर्ण नहीं होता। केरल की संस्कृति का परिचय देते हुए मलयालम भाषा और साहित्य पर संस्कृत की परंपरा के प्रभाव का उल्लेख कीजिए।

(ख) मलयालम और हिंदी की लिंग व्यवस्था की तुलना कीजिए।

2. निम्नलिखित मलयालम शब्दों के हिन्दी पर्याय बताइए। 5

1. ചരിത്രം
2. ആരോഗ്യം
3. തോട്ടം
4. തള്ളവിരൽ
5. സൂചി
6. പിറന്നാൾ
7. അടുക്കള
8. പിതൃസഹോദരി
9. അംഗീകാരം
10. [illegible]
11. ഇഞ്ചി
12. വിശപ്പ്
13. ജലദോഷം
14. ചെലവ്
15. ബഹുമാനിക്കുക
16. [illegible]
17. ചെറുപയറ്
18. മിക്കവാറും
19. മാതാപിതാക്കൾ
20. ഇടപാട്

Scanned with CamScanner

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के मलयालम पर्याय बताइए : 5

1	अखबार	11	सुस्त
2	मक्खन	12	नाखून
3	पाजेब	13	सलाह
4	तलवार	14	मज़बूत
5	महँगा	15	प्रबंधक
6	तोई	16	ब्याज
7	दौरा कार्यक्रम	17	मौसम
8	कहावत	18	टोकरी
9	बंदरगाह	19	रिश्तेदार
10	भूरा	20	खिलौना

4 निम्नलिखित वाक्यों को हिंदी में अनुवाद कीजिए 20

1) ഈ കത്തിന് എത്രയും വേഗം മറുപടി അയക്കുക.

2) വല്യച്ഛൻ ഇന്നലെ ഹൈദരാബാദിൽ നിന്നും മടങ്ങി.

3) കേരളത്തിൽ കുരുമുളക്, ഏലം, റബ്ബർ ഇവയെല്ലാം കൃഷി ചെയ്യുന്നു.

3) ഈ വായനശാലയിൽ ധാരാളം പുസ്തകങ്ങൾ ഉണ്ട്

4) തിരഞ്ഞെടുപ്പിനു ശേഷം പുതിയ സർക്കാർ രൂപീകരിക്കപ്പെടും

5) മഴ തുടങ്ങിയപ്പോൾ ഞാൻ മൈതാനത്തായിരുന്നു.

Scanned with CamScanner

6) നിനക്ക് വിശക്കുന്നുവോ? വരൂ, ഭക്ഷണം കഴിക്കാം.

7) ഒട്ടകത്തിന് മരുഭൂമിയിൽ സഞ്ചരിക്കാൻ കഴിയും.

8) നാളെ ബാങ്ക് അവധിയാണെന്ന് ആര് പറഞ്ഞു.?

9) അദ്ധ്യാപകൻ വരുന്നതിനു മുമ്പ് കുട്ടികൾ ബഹളം വച്ചുകൊണ്ടിരുന്നു.

10) നാം പാവപ്പെട്ടവരെ സഹായിക്കണം.

11) നാടകം തുടക്കം മുതൽ അവസാനം വരെ രസകരമായിരുന്നു.

12) ഗ്രാമത്തിൽ വാർത്തകൾ വൈകിയാണ് കിട്ടുന്നത്.

13) നേതാവ് വരാൻ താമസിച്ചു, എന്തെന്നാൽ വഴിയിൽ അപകടം പറ്റി.

14) അച്ഛൻ പറഞ്ഞ കാര്യം മകൻ മറന്നുപോയി

15) ഇന്നലത്തെ വെയിലിന് ചൂട് ഉണ്ടായിരുന്നില്ല.

16) ഓടുന്ന വണ്ടിയിൽ നിന്ന് ഇറങ്ങരുത്

17) താങ്കൾക്ക് ജർമ്മൻ ഭാഷ അറിയാമോ?

18) ശുകപ്ലേ എന്ന കൃതിയിൽ ഉണ്ടാകുന്ന ആൾ ആരാണെന്ന് നിങ്ങൾക്ക് അറിയാമോ?

19) നിങ്ങൾ എം.ടി. വാസുദേവൻ നായരുടെ 'നാലുകെട്ട്' എന്ന നോവൽ വായിച്ചിട്ടുണ്ടോ?

20) മഹാബലിയുടെ ഭരണകാലത്ത് മോഷണമോ ചതിയോ ഉണ്ടായിരുന്നില്ല.

5 (क) निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों का आशय हिंदी में स्पष्ट कीजिए : 10

1) പൊടിപൊടിക്കുക
2) ഒഴിവുകഴിവ് പറയുക.
3) തടിതപ്പുക.
4) കണ്ണിലെ കരട്.
5) താളം പിഴക്കുക.
6) അരക്കുടം അലയ്ക്കും, നിറകുടം തുളുമ്പില്ല.
7) ഇന്നലെ പെയ്ത മഴയിൽ ഇന്നു കുരുത്ത തകര
8) മരമില്ലാത്ത നാട്ടിൽ ആവണക്ക് മഹാമരം.
9) ഗതികെട്ടാൽ പുലി പുല്ലും തിന്നും
10) പുത്തനച്ചി പുരപ്പുറം തൂക്കും.

Scanned with CamScanner

ख) निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों के लिए हिंदी लोकोक्तियाँ / मुहावरे लिखिए। 10

1) വിളക്കിൻ ചുവട്ടിൽ ഇരുട്ട്

2). സ്വന്തം കാലിൽ നിൽക്കുക

3) കണ്ണ് നട്ടിരിക്കുക

4) കണ്ണീര് ഒഴുക്കുക

5) ഉരുവണ്ണ് കറിവെയ്ക്കുക

6) എല്ലു മുറിയെ പണിതാൽ പല്ലു മുറിയെ തിന്നാം.

7) ഒരു വെടിക്ക് രണ്ട് പക്ഷി.

8) കുരയ്ക്കും പട്ടി കടിക്കില്ല.

9) കാര്യം കാണാൻ കഴുതക്കാലും പിടിക്കണം.

10) കിടാൻ പഠിച്ചാൽ നിൽക്കാനും പഠിക്കണം.

Scanned with CamScanner

6 निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10×2=20

(क)

"ശരീരമാദ്യം ഖലുധർമ്മസാധനം"

സ്വധർമ്മം അനുഷ്ഠിക്കാനുള്ള ഉപകരണമാണ് ശരീരം. പ്രസ്തുത ശരീരത്തിൽ പ്രാണൻ തടസ്സം കൂടാതെ സഞ്ചരിച്ച് ഇന്ദ്രിയങ്ങളെയും മറ്റും സുഗമമായി പ്രവർത്തിപ്പിക്കണമെങ്കിൽ അതിനനുയോജ്യമായ ഭക്ഷണക്രമവും ചര്യകളും ശീലിക്കേണ്ടിയിരിക്കുന്നു.

വൈശ്വാനരഭാവത്തിൽ ശരീരത്തിനുള്ളിൽ കുടികൊള്ളുന്ന ദേവന് അർപ്പിക്കുന്ന ഹവിസ്സ് (ഹോമദ്രവ്യം) ആണ് ആഹാരം എന്ന് സങ്കല്പിക്കപ്പെടുന്നു. ദേവന് സമർപ്പിക്കാൻ യോഗ്യമായ ഭക്ഷണങ്ങൾ തന്നെയാണ് മനുഷ്യനും ഭക്ഷിക്കേണ്ടതെന്ന് സാരം.

ശരീരത്തെ ക്ഷേത്രമായും ശരീരത്തിനകത്ത് കുടികൊള്ളുന്ന ജീവാത്മാവിനെ ഈശ്വരചൈതന്യമായും കാണുന്ന ഭാരതീയ പാരമ്പര്യത്തിൽ ഈശ്വരന് നിവേദിക്കുവാൻ കൊള്ളാവുന്നവ മാത്രമാണ് ഭക്ഷ്യയോഗ്യമായി കരുതപ്പെട്ടിരുന്നത്.

അമിതാഹാരംകൊണ്ടോ, അനാഹാരം (കഠിനമായ ഉപവാസം) കൊണ്ടോ ശരീരത്തെ ക്ലേശിപ്പിക്കുന്നവർ ദൈവത്തിന്റെ ആലയത്തെയാണ് ജീർണ്ണിപ്പിക്കുന്നത് എന്ന് ഗീതയിൽ ഭഗവാൻ ശ്രീകൃഷ്ണൻ രേഖപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു.

(ख)

എഴുത്തിന്റെ ആരംഭം എന്നായിരുന്നു? എങ്ങനെയായിരുന്നു? എഴുത്തില്ലാത്ത കാലത്തിന്റെ കഥ എങ്ങനെയറിയും? മണ്ണിനടിയിലും ആൾപ്പെരുമാറ്റമില്ലാത്ത പാറപ്പൊത്തുകളിലും മറ്റും അറിയപ്പെടാതെ കിടന്ന പഴയ വസ്തുക്കളെ അടിസ്ഥാനപ്പെടുത്തിയാണ് പ്രാചീനമനുഷ്യന്റെ ജീവിതത്തെപ്പറ്റി തുച്ഛമെങ്കിലും വിലപ്പെട്ട അറിവു കിട്ടുന്നതു്. പുരാതത്വം എന്ന പേരിൽ അതിപ്രധാനമായ ഒരു വിജ്ഞാനശാഖതന്നെ രൂപപ്പെട്ടുവന്നതു് പഴയ വസ്തുക്കളെ ഖനനംചെയ്തെടുത്തു പഠിച്ചുകൊണ്ടാണു്. കന്മഴുകൾ, കലപ്പൊട്ടുകൾ, പണിയായുധങ്ങൾ, ആഭരണങ്ങൾ, മനുഷ്യന്റെയും മൃഗങ്ങളുടെയും അവശിഷ്ടങ്ങൾ എന്നിങ്ങനെ അതിവിപുലമാണു് പുരാവസ്തുക്കളുടെ ലോകം. പുരാവസ്തുക്കളുടെ വിജ്ഞാനം നേടിയവരെ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ എന്നു പറയുന്നു. പുരാവസ്തുക്കൾ ഒട്ടുമുക്കാലും പൊട്ടിത്തകർന്ന നിലയിലാണു് കൈയിൽ കിട്ടുക. പുരാതത്വജ്ഞർ അവയെ കരുതലോടെ കൂട്ടിച്ചേർത്തു് പഴയ രൂപത്തിലാക്കും. പഠനം കഴിഞ്ഞു് അത്തരം വസ്തുക്കൾ കാഴ്ചബംഗ്ലാവുകളിൽ സംരക്ഷിച്ചു പ്രദർശിപ്പിക്കും. അവ പിന്നീടുവരുന്നവർക്കു് ഉപയോഗിക്കാൻ കഴിയും. ഇമ്മട്ടിൽ പുരാതത്വജ്ഞന്മാർ കണ്ടെത്തിയ ചില വസ്തുക്കളുടെ സഹായത്താലാണു് അതിപ്രാചീനകാലത്തു് മനുഷ്യർ തമ്മിൽ ആശയവിനിമയം നടത്തിയതിന്റെ അടയാളങ്ങൾ അറിയപ്പെട്ടതു്.

Scanned with CamScanner

7) निम्नलिखित अनुच्छेद का मलयालम में अनुवाद कीजिए: 10

प्रकृति और मानव पंचतत्व-पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व गगन के निर्मित है। पंचतत्वों में संतुलन से मनुष्य के हृदय, मन, तन व आत्मा को शांति और आनंद की अनुभूति होती है। इन्हीं तत्वों को नृत्य-रचना 'समवेत' में पेश किया गया, जिसकी अवधारणा कथक नृत्यांगना रचना यादव और नृत्य परिकल्पना अदिती मंगलदास ने की थी।

नृत्य समारोह का आयोजन सितंबर को इंडिया हैबिटाट संटर के स्टेन ऑडिटोरियम नई दिल्ली में किया गया। 'दी दृष्टिकोण डांस फाउंडेशन' के कलाकार गौरी दिवाकर, रश्मि उप्पल, आनंदिता, रचना यादव और धीरेंद्र तिवारी ने नृत्य रचना को पेश किया।

नृत्य रचना पांच खंडों में पिरोई गई थी। पहले अंश में पृथ्वी का चित्रण था। यह अथर्ववेद के पृथ्वी-श्लोक पर आधारित था। नत्यांगना आनंदिता और नर्तक धीरेंद्र ने कथक के शुद्ध नृत्य को पेश किया। पृथ्वी के चक्रों को दर्शाते नृत्य का आरंभ धीमी गति के चक्कर से हुआ। यहीं 'माता भूमि पुत्रोहं' के श्लोक पर भावों को संक्षिप्त रूप में पेश किया।

दूसरे अंक में बंदिश - 'मनवा तोरे संग बह-बह जाए' पर भावों और शुद्ध नृत्य को पेश किया गया। 'जल' के प्रवाह और गहराई को प्रेम से तुलनात्मक रूप में चित्रित किया गया। जल के प्रवाह का चित्रण चलन से हुआ। रश्मि ने नौ मात्रा की ताल वसंत में कुछ टुकड़े और तिहाइयाँ पेश कीं। रश्मि की एक से सात अंकों की तिहाई की प्रस्तुति आकर्षक थी। नृत्यांगना गौरी ने शिखर ताल में कुछ तिहाइयां और परण पेश किया। गौरी ने एक तिहाई में हर सम को एक नए अंदाज में पेश कर दर्शकों को मोहित किया।

— x —

Scanned with CamScanner